एक दिव्य रहस्य जिसे दुनिया अक्सर गलत समझती है

1 कुरिन्थियों 1:25
“क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों की बुद्धि से बड़ी
है, और परमेश्वर की कमजोरी मनुष्यों की शक्ति से बड़ी है।”

यह पद अक्सर सवाल उठाता है:
क्या परमेश्वर में सच में मूर्खता या कमजोरी है?

उत्तर स्पष्ट है—नहीं। परमेश्वर सर्वज्ञानी और सर्वशक्तिमान हैं।

भजन संहिता 147:5 कहती है:
“हमारा प्रभु महान है, और उसकी शक्ति बड़ी; उसकी समझ अनंत
है।”

तो फिर बाइबल में “परमेश्वर की मूर्खता” या “कमजोरी” कैसे हो सकती है?

1. तुलना की भाषा को समझना

पौलुस यह नहीं कह रहे कि परमेश्वर सच में मूर्ख या कमजोर हैं। वे रूपक भाषा का उपयोग कर रहे हैं ताकि एक विरोधाभास को उजागर किया जा सके: जो दुनिया परमेश्वर की योजना में मूर्खता या कमजोरी समझती है, वह वास्तव में दिव्य बुद्धि और शक्ति से भरा है।

यह दिखाता है कि दिव्य दृष्टिकोण और मानव दृष्टिकोण में कितना बड़ा अंतर है। जैसा कि परमेश्वर कहते हैं:

यशायाह 55:8–9
“क्योंकि मेरे विचार तुम्हारे विचारों के समान नहीं हैं, और मेरे मार्ग तुम्हारे मार्गों के समान नहीं हैं,” यहोवा कहता है।
“जैसे कि आकाश पृथ्वी से ऊँचा है, वैसे ही मेरे मार्ग तुम्हारे मार्गों से ऊँचे हैं, और मेरे विचार तुम्हारे विचारों से बड़े हैं।”

2. मानव बुद्धि और परमेश्वर की बुद्धि

दुनिया में बुद्धि अक्सर तर्क, शिक्षा, प्रतिष्ठा और नवाचार से मापी जाती है। लेकिन परमेश्वर की बुद्धि अलग है। वह विनम्रता में अपनी शक्ति, दुःख में अपनी महिमा, और हार में अपनी विजय प्रकट करते हैं।

इसी कारण, पौलुस के समय क्रूस पर मसीह का संदेश यहूदियों और यूनानियों दोनों के लिए अजीब और चुनौतीपूर्ण था।

1 कुरिन्थियों 1:22–24
“क्योंकि यहूदी चिह्न मांगते हैं, और यूनानी बुद्धि की खोज करते हैं;
पर हम मसीह को क्रूस पर मरे हुए प्रचार करते हैं—यहूदियों के लिए पतन का कारण और यूनानियों के लिए मूर्खता;
पर जिन्हें बुलाया गया है, उनके लिए, चाहे यहूदी हों या यूनानी, मसीह परमेश्वर की शक्ति और परमेश्वर की बुद्धि हैं।”

यहूदियों के लिए, जो राजनीतिक उद्धार और चमत्कार की उम्मीद रखते थे, एक गरीब बढ़ई का रोमन क्रूस पर मरना अस्वीकार्य था।
यूनानियों के लिए, जो तर्क और दर्शन की प्रशंसा करते थे, यीशु की शिक्षाएँ असंभव और अजीब लगीं। “पक्षियों पर विचार करो?” “अपने शत्रुओं से प्रेम करो?” ये शिक्षाएँ दुनिया के बौद्धिक अभिमान को चुनौती देती हैं।

लेकिन जिन्हें परमेश्वर ने बुलाया, उनके लिए यह “मूर्ख” संदेश वास्तव में जीवन बचाने वाली बुद्धि और शक्ति है।

3. मसीह — परमेश्वर का छिपा हुआ खजाना

यीशु परमेश्वर की बुद्धि का अवतार हैं:

कुलुस्सियों 2:3
“क्योंकि उसमें सभी बुद्धि और ज्ञान के खजाने छिपे हुए
हैं।”

जैसे कोई हीरा न पहचानने वाला व्यक्ति हीरा फेंक देता है, वैसे ही कई लोग यीशु को अस्वीकार कर देते हैं क्योंकि वे उसकी महत्ता नहीं समझ पाते। मसीह की महिमा आध्यात्मिक दृष्टि से पहचानी जाती है।

1 कुरिन्थियों 2:7–8
“पर हम परमेश्वर की बुद्धि का रहस्य बताते हैं, वह छिपी हुई बुद्धि जिसे परमेश्वर ने युगों से हमारे महिमा के लिए निर्धारित किया है, जिसे इस युग के कोई शासक नहीं जानते थे;

वरना यदि वे जानते, तो उन्होंने महिमा के प्रभु को क्रूस पर नहीं चढ़ाया होता।”

इसका मतलब है कि क्रूस कोई गलती नहीं था—यह परमेश्वर की योजना थी दुनिया में उद्धार लाने की। (प्रेरितों के काम 2:23)

जैसे कोई व्यक्ति वर्षों तक हीरे की तलाश करता है, वैसे ही यीशु मसीह सबसे कीमती खजाना हैं—घमंडी लोगों के लिए छिपे हुए, लेकिन विनम्र लोगों के लिए प्रकट।

मत्ती 13:44
“स्वर्ग का राज्य उस खजाने के समान है जो खेत में छिपा हुआ
है…”

4. क्यों सुसमाचार दुनिया के लिए मूर्खता जैसा लगता है

आज भी लोग यीशु के संदेश का मज़ाक उड़ाते हैं या उसे नजरअंदाज करते हैं। वे दौलत, प्रसिद्धि और शिक्षा के पीछे भागते हैं, सोचते हैं कि यही जीवन का लक्ष्य है। लेकिन जो कुछ वे खोजते हैं, वह पूर्ण रूप से मसीह में मिलता है।

कुलुस्सियों 1:16–17
“क्योंकि सब कुछ उसी के द्वारा और उसी के लिए बनाया गया है।
और वही सभी चीजों से पहले है, और उसी में सब कुछ स्थिर है।”

मसीह के बिना, लोग उस स्रोत को नकारने वाले की तरह हैं, जो प्यास के बारे में शिकायत करते हैं। वे स्रोत को नजरअंदाज करते हैं और केवल वही खोजते हैं जो स्रोत ही दे सकता है।

ईसाई भी अक्सर उपहास का पात्र बनते हैं—कमज़ोर या भोले समझे जाते हैं। लेकिन हम जानते हैं जो दुनिया नहीं जानती:

1 कुरिन्थियों 1:18
“क्योंकि क्रूस का संदेश उन लोगों के लिए मूर्खता है जो नाश
हो रहे हैं, पर हम जो बचाए जा रहे हैं, उनके लिए यह परमेश्वर की शक्ति है।”

5. मसीह में विश्वास करने वालों का आश्वासन

जो यीशु का अनुसरण करते हैं, उन्हें कभी पछतावा नहीं होता। उनका जीवन आसान नहीं हो सकता, लेकिन वे सदैव सुरक्षित हैं।

भजन संहिता 37:25
“मैंने यौवन में भी वृद्धावस्था देखी; फिर भी मैंने धर्मी
को परित्यक्त या उसके वंशज को रोटी मांगते हुए नहीं देखा।”

और सबसे अच्छा अभी आने वाला है! जब हम अंततः यीशु को उसकी महिमा में देखेंगे, तब समझेंगे कि उन्हें क्यों कहा जाता है:

राजाओं का राजा (प्रकाशितवाक्य 19:16)
प्रभुओं का प्रभु
और विश्वासियों को क्यों कहा जाता है राजसी पुजारी, पवित्र राष्ट्र (1 पतरस
2:9)

क्या आप परमेश्वर की बुद्धि को अपनाएंगे या अस्वीकार करेंगे?

आज भी बहुत लोग यीशु को अस्वीकार करते हैं। लेकिन केवल वही आपके जीवन को अपने हाथ में थामे हैं। उन्होंने आपके पापों के लिए मारा, मृतकों में से जी उठे, और आपको जीवन देने का प्रस्ताव देते हैं यदि आप उन पर विश्वास करेंगे।

यूहन्ना 14:6
“मैं मार्ग, सत्य और जीवन हूँ। मेरे द्वारा बिना कोई पिता के पास नहीं आता।”

1 कुरिन्थियों 1:30
“परंतु आप उसी में हैं, मसीह यीशु में, जो हमारे लिए
परमेश्वर से बुद्धि, धर्म, पवित्रता और उद्धार हुआ।”

यीशु परमेश्वर का अनमोल खजाना हैं। उन्हें दुनिया अस्वीकार कर सकती है, लेकिन परमेश्वर ने उन्हें चुना है और वे अमूल्य हैं (1 पतरस 2:4)। आज ही अपने हृदय को उनके लिए खोलें।

परमेश्वर की सच्ची बुद्धि—यीशु मसीह—में चलने का निर्णय लेने पर आप धन्य होंगे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp